

चतुष्कल वि. (तत्.) 1. चार कलाओं वाला 2. चार मात्राओं वाला जैसे- छंदशास्त्र में चतुष्कल गण, संगीत की चतुष्कल ताल।

चतुष्की स्त्री. (तत्.) 1. पुष्करिणी का एक भेद 2. मसहरी 3. चौकी।

चतुष्टोम पुं. (तत्.) 1. अश्वमेध यज्ञ का एक अंग 2. वायु 3. चार स्तोम वाला एक यज्ञ।

चतुष्टय पुं. (तत्.) 1. चार की संख्या 2. चार वस्तुओं का समूह।

चतुष्पथ पुं. (तत्.) 1. चौराहा, चौमुहानी 2. ब्राह्मण।

चतुष्पद पुं. (तत्.) 1. चार पैरों वाला जीव या पशु, चौपाया 2. ज्योतिष में एक प्रकार का करण जिसमें जन्म लेने वाला दुराचारी, दुर्बल, और निर्धन होता है 3. वैद्य, रोगी, औषध और परिचारक का समूह वि. (तत्.) 1. चार पदों (पैरों) वाला 2. जिसके चार पद, पाए या पैर हों।

चतुष्पदी स्त्री. (तत्.) 1. चौपाई छंद, जिसके चार चरणों में से प्रत्येक में सोलह-सोलह मात्राएँ होती हैं और अंत में गुरु लघु होते हैं 2. चार पदों का गीत।

चतुष्पाटी स्त्री. (तत्.) नदी।

चतुष्पाठी स्त्री. (तत्.) 1. पाठशाला, (छात्रों की पढ़ने की जगह या स्थान या शाला)।

चतुष्पाणि पुं. (तत्.) चार हाथों वाला (वाले), विष्णु, चतुर्भुज।

चतुस्तन स्त्री. (तत्.) चार स्तनों वाली, गाय, भैंस आदि या अन्य प्राणि, चतुस्तनी।

चतूरात्र पुं. (तत्.) चार रात्रियों में संपन्न होने वाला एक प्रकार का यज्ञ।

चत्वर पुं. (तत्.) 1. चौरस्ता, चौराहा, चौमुहानी 2. वह स्थान जहाँ भिन्न-भिन्न देशों से आकर लोग रहते हैं 3. होम के लिए साफ किया हुआ स्थान। 4. चार रथों का समूह।

चत्वाल पुं. (तत्.) 1. होमकुंड 2. कुश नामक घास, दाब (डाभ) 3. गर्भ 4. वेदी, चबूतरा।

चद्दर स्त्री. (फा.) 1. चादर, (ओढ़ने बिछाने की) 2. किसी धातु का आयताकार बहुत बड़ा पत्तर या टुकड़ा 3. लोहे या टीन की 'चद्दर' मुहा. चद्दर पड़ना- बिछना प्रयो. "आज रात्रि के शीतकाल के कारण खेतों में पाले की चद्दर- सी बिछ गई है 3. एकप्रकार की तोप।

चनक वि. (तद्.) 1. क्षणिक 2. खुलना और बंद होना।

चनकना अ.क्रि. (देश.) दे. चटकना।

चनखना अ.क्रि. (देश.) चिढ़ना, खफा होना, रुष्ट होना, रुठ जाना, चिटकना।

चनचना पुं. (अनु.) 'झनझना' नामक कीड़ा जो तंबाकू की फसल को हानि पहुँचाता है।

चनचनाना अ.क्रि. (देश.) 1. चिढ़ जाना 2. क्रुद्ध होना 3. कलह कर बैठना 4. खफा होना।

चना पुं. (तद्.) चैती (रबी की) फसल का एक प्रधान अन्न जिसका पौधा बहुत लंबा नहीं होता उसको विभिन्न प्रकार से प्रयोग करके खाने के काम में लाया जाता है, इसके लिए अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती टि. चने की कोमल छोटी-छोटी पत्तियाँ कुछ खटाई और खार (क्षार) लिए होती हैं, ये खाने में स्वादिष्ट और रुचिकर होती हैं, फल आने से पूर्व पत्तियों को तोड़कर नमक के साथ खाया जाता है, चने के दाने प्रायः गोल होते हैं तथा उनके ऊपर का छिलका उतारने पर अंदर से दो दालें निकलती हैं जो अन्य दालों की तरह पकाकर खाने के अतिरिक्त अन्य रूपों में भी खाने के लिए प्रयुक्त होती हैं, ताजा पका हरा चना लोग कच्चा भी खाते हैं, सूखा चना भाड़ में भुनवाकर खाया जाता है, यह शक्तिवर्धक और पौष्टिक होता है, तथापि यह थोड़ा गुरुपाक या गरिष्ठ होता है, भारत में इसे घोड़ों तथा अन्य चौपायों को भी खिलाया जाता है ताकि वे बलिष्ठ बनें, वैद्यक में इसे मधुर, रुखा, कृमि तथा रक्तपित्तनाशक, दीपक, रुचि बलवर्धक